प्रातःक्लास 19/7/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्तिः बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। वास्तव में दोनों ही बाप हैं। एक हद का, दूसरा बेहद का। यह भी बाप है, वह भी बाप है। बेहद का बाप आकर पढ़ाते हैं। बच्चे जानते हैं हम नई दुनिया सतयुग के लिए पढ़ रहे हैं। ऐसी पढ़ाई कहाँ मिल नहीं सकती। तुम बच्चों ने तो सतसंग बहुत ही किये हैं। तुम भक्त थे ना। जरूर गुरु किये हुए हैं, शास्त्र अध्ययन किए हुए हैं; परन्तु अभी बाप ने आकर जगाया है। बाप कहते हैं अभी यह पुरानी बदलनी है। अभी मैं तुमको नई दुनिया में(के) लिए पढ़ाता हूँ। तुम्हारा टीचर भी हूँ ना। कोई भी गुरु, टीचर नहीं कहेंगे। स्कूल में टीचर पढ़ाते हैं जिससे ऊँच पद पाते हो; परन्तु वह पढ़ाई है यहाँ के लिए। अभी तुम जानते हो हम जो पढ़ते हैं वह यहाँ के लिए नहीं है। यह तुम्हारी पढ़ाई है भविष्य के लिए। कोई भी स्टुडेन्ट पढ़ते हैं यहाँ इस पुरानी दुनिया के लिए। तुम समझते हो हम पढ़ते हैं नई दुनिया के लिए। नई दुनिया को ही गोल्डेन एजेड वर्ल्ड कहा जाता है। यह तो जानते हो ना यह पढ़ाई है ही भविष्य के लिए। इस समय आसुरी गुणों को बदलकर दैवी गुण धारण करनी है। यहाँ तुम बदलने लिए आते हो ना। करैक्टर्स की महिमा की जाती है। देवताओं के आगे जाकर कहते हैं ना आप ऐसे2 हैं। हम ऐसे2 हैं। तुमको अभी एमआबजेक्ट मिली है भविष्य के लिए। बाप नई दुनिया भी स्थापन करते हैं और फिर तुमको पढ़ाते भी हैं। वहाँ तो विकार की बात ही नहीं। बच्चे जानते हैं हम रावण पर जीत पहनते हैं। रावण राज्य में हैं ही सभी विकारी। यथा राजा–रानी तथा प्रजा सभी विकारी ही हैं। अभी तो है ही पंचायती राज्य। इनके पहले राजा रानी का राज्य था; परन्तु वह भी पतित थे। जो भी पतित राजाएँ हैं उन्हों के पास मंदिर भी होते हैं। निर्विकारी देवताओं की पूजा करते हैं। जानते हैं देवी–देवताएँ पास्ट में होकर गये हैं। अभी तो निर्विकारी राज्य है नहीं। आत्माएँ वही यहाँ हैं; परन्तु शरीर, नाम–रूप भिन्न2 लेते आये हैं। बाप आत्माओं को याद दिलाते हैं। तुम यह देवी देवता शरीर वाले थे। तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों ही पवित्र थी। अभी फिर से बाप आकर पतित से पावन बनाते हैं। अर्थात् भ्रष्टाचारी को श्रेष्ठाचारी बनाते हैं। इसलिए ही तुम आते हो। बाप पहले2 आर्डीनेन्स निकालते हैं बच्चे काम महाशत्रु है। यह तुमको आदि, मध्य, अन्त दुख देते आये हैं। अभी तुमको गृहस्थ व्यवहार में रहते पावन बनना है। ऐसे नहीं देवी–देवताएँ कोई आपस में प्यार नहीं करते होंगे, भाकी नहीं पहनते होंगे; परन्तु वहाँ विकारी दृष्टि नहीं रहती है। बाप भी कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते कमल फूल समान रहो। अपना भविष्य ऐसा बनाना है। जैसे तुम पवित्र झाड़ थे। ऐसा बनना है। हरेक आत्मा अपना नाम–रूप लेकर पार्ट बजाती है। अभी तुम्हारा है यह अन्तिम पार्ट। पवित्रता के लिए भी बहुत मुँझते हैं कि क्या करें। कैसे कम्पेनीयन हो रहें। कम्पेनीयन(साथी) हो रहने का भी अर्थ क्या है। विलायत में जब बूढ़े होते हैं तो फिर कम्पेनीयन रखने लिए शादी करते हैं। सम्भाल करने के लिए। ऐसे बहुत हैं तो ब्रह्मचारी रहना पसन्द करते हैं। सन्यासियों–उदासियों आदि की तो बात ही अलग है। गृहस्थ में रहने वाले भी बहुत होते हैं जो शादी करना पसन्द नहीं करते हैं। यह एक उपान्दी समझते हैं। शादी करना फिर बाल बच्चों आदि की सम्भाल करना कौन झंझट में पड़ेगा। जाल फैलावें ही क्यों जो खुद ही फंस मरे। ऐसे बहुत यहाँ भी आते हैं। 40 वर्ष हो गया ब्रह्मचारी रहते हैं। इसके बाद क्या शादी करेंगे। स्वतंत्र रहना पसन्द करते हैं। तो बाप उन्हों को भी देखकर खुश होते हैं। समझते हैं यह तो है ही बन्धन रहित। बाकी रहा शरीर का बन्धन। इसमें देह सहित सभी कुछ भूलना होता है। सिर्फ एक बाप को ही याद करना है। और कोई भी देहधारी को नहीं। क्राइस्ट बुद्ध आदि सभी देहधारी ही थे। जरूर पुनर्जन्म में आवेंगे। निराकार शिव तो देहधारी नहीं है। उनका नाम ही है शिव। शिव का मंदिर भी है। तुम्हारी आत्मा को आत्मा ही कहा जाता है। फिर शरीर का नाम रखा जाता है। आत्मा का नाम नहीं रखा जाता। नाम जीवात्मा का रखा जाता है। आत्मा को आत्मा ही कहें। आत्मा आत्मा ही है। उनको पार्ट मिला हुआ है 84 जन्मों का। यह भी समझाया है यह अविनाशी ड्रामा है। इसमें कुछ भी बदली नहीं हो सकता।

84 जन्म पूरी कर पहला नम्बर जन्म लेना पड़ेगा। यह तो जानते हो पहले2 हमारा धर्म–कर्म जो श्रेष्ठ था वह अभी भ्रष्ट बन गया है। ऐसे नहीं कि देवी–देवता धर्म ही खत्म है। गाते भी देवताएँ सर्वगुण सम्पन्न 16कला सम्पूर्ण थे। यह महिमा देवी देवताओं के लिए ही गाये जाते हैं। ल0ना0 दोनों ही पवित्र थे। पवित्र प्रवृत्ति मार्ग था। अभी है अपवित्र प्रवृत्ति मार्ग। 84 जन्मों में भिन्न2 नाम रूप देश–काल फिरता है। यह तो समझते हो 84 का चक्र जरूर है। बाप ने बताया है मीठे2 बच्चों तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो। एक का बात नहीं। मैं तुम्हारी 84 जन्मों की कहानी सुनाता हूँ। तो जरूर पहले जन्म से ही लेकर समझाना पड़े। तुम देवी–देवता धर्म वाले पवित्र प्रवृत्ति मार्ग वाले थे फिर पुनर्जन्म लेते2 विकारी बने हो तो देवताओं के आगे जाकर माथा टेकते हो। क्रिश्चन लोग क्राइस्ट लोग को, बौद्धी लोग बुद्ध को, नानक वाले नानक के दरबार में जावेंगे। उससे मालूम पड़ता है यह किस धर्म का है। तुम्हारे लिए तो कह देते हैं यह हिन्दु है। आदी सनातन देवी–देवता धर्म कहाँ गया। किसको भी पता नहीं है। प्रायः लोप हो गया है। चित्र है, भक्तिमार्ग के लिए भारत में चित्र तो अनेक बनाये हैं। भिन्न2 बनाते रहते हैं। मनुष्यों की भी अनेक मतें हैं। शिव के भी अनेक नाम रख दिये हैं। असल में उनका एक ही नाम शिव है। ऐसे भी नहीं उसने पुनर्जन्म लिया है तब नाम फिराते जाते हैं। नहीं। मनुष्यों की अनेक मतें हैं। तो अनेक नाम रख दिये हैं। श्रीनाथ द्वारे में जाओ वहाँ भी बैठे तो वही ल0ना0 हैं, फिर दूसरे जगह में जाओ तो कहेंगे यह ल0ना0 का मंदिर है। जगतनाथ के मंदिर में भी मूर्ति तो वही है। नाम भिन्न2 रख देते हैं। यह भक्तिमार्ग है। अभी तो तुम भक्तिमार्ग में नहीं हो। जब तुम सूर्यवंशी थे तो पूजा आदि भी नहीं करते थे। तुम सारे विश्व पर राज्य करते थे। अभी तुम समझते हो हमारा जो आदि सनातन देवी–देवता धर्म था उनमें तो बहुत ही सुखी थे। हमारा राज्य था। श्रीमत पर श्रेष्ठ राज्य स्थापन किया था। उनको कहा ही जाता है सुखधाम। और कोई ऐसे नहीं कहेंगे कि हमको बाप पढ़ाते हैं। मनुष्य से देवता बनाते हैं। तुम बच्चों को याद है। बरोबर देवी–देवताओं का राज्य था ना। निशानी भी है। सिर्फ उन्हों का ही राज्य था। वहाँ किले आदि भी होते नहीं। यहाँ किले आदि बनाते हैं सेफ्टी के लिए। इन्हों के राज्य में किले आदि थे नहीं। दूसरा कोई चढ़ाई करने वाला होता ही नहीं तो किले बनाने की दरकार ही नहीं। अभी तुम समझते हो हम उस एक ही धर्म में ट्रान्सफर हो रहे हैं। 84 जन्मों बाद फिर पहला नम्बर देवी–देवता जन्म में जावेंगे। इसके लिए ही तुम पढ़ते हो। तुम पढ़ते ही हो राजाई के लिए। भविष्य में राजाओं का राजा बनेंगे। भगवानुवाचः मैं तुमको राजाओं का राजा बनाता हूँ। अभी तो राजा रानी कोई है नहीं। प्रजा का राज्य है। घोर–अंधियारा लगा पड़ा है। कितने लड़ाई झगड़े आदि होते रहते हैं। यह तो सभी जानते हैं कलियुग है आयरनएजेड वर्ल्ड। गोल्डेनएजेड वर्ल्ड होकर गया है। सिलवर एजेड वर्ल्ड होकर गया है। तुम कहेंगे हम आयरन एजेड थे। अभी फिर हम पुरुषोत्तम संगमयुग पर खड़े हैं। अभी न आयरन एज में हैं न गोल्डेन एज में हैं। तुम अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर खड़े हो। बाप तुमको पहले नम्बर में ले जाने आये हैं। सभी का कल्याण करते हैं। तुम जानते हो हमारा भी कल्याण होता है। पहले2 हम जरूर सतयुग में जावेंगे। बाकी जो भी धर्म के हैं वह सभी शान्तिधाम में चले जावेंगे। बौद्धी, क्रिश्चन आदि तो सतयुग में नहीं आवेंगे। तो यहाँ आकर पढ़ेंगे भी नहीं। तुम हो देवी–देवता धर्म के। तुमको यह सारा सृष्टि का चक्र का राज़ समझाया जाता है। फिर बाप कहते हैं सभी को पवित्र भी बनना है। तुम हो ही पवित्र देश के रहने वाले। जिसको मुक्तिधाम, शान्तिधाम, निर्वाणधाम कहा जाता है। वाणी से परे। सिर्फ आत्माएँ रहती हैं। शरीर होगा तो वाणी जरूर होगी। तुमको अभी वाणी से भी परे ले जाते हैं। ऐसा तो कब कोई कह न सके कि हम तुमको निर्वाणधाम, शान्तिधाम में ले जाते हैं। वह तो कहते हैं हम ब्रह्म में लीन होंगे। तुम बच्चे जानते हो हम अभी तमोप्रधान दुनिया में हैं। इसमें तुमको स्वाद नहीं आवेगा। यह भी तुम जानते हो नई सृष्टि की स्थापना करने और पुरानी का विनाश लिये ही भगवान को यहाँ आना पड़ता है। शिवजयन्ती भी यहाँ मनाते हैं। तो क्या आकर

करते हैं कोई बतावे। जयन्ती मनाते तो हैं ना। जरूर वह आते हैं रथ पर विराजमान होकर। उन्होंने फिर घोड़े–गाड़ी का रथ दिखाया है। बाप बैठ बताते हैं मैं किस रथ पर सवार होता हूँ। बच्चों को बताता हूँ। फिर यह ज्ञान प्रायःलोप हो जाता है। इनके 84 जन्मों के अन्त में बाबा को आना पड़ता है। यह ज्ञान कोई दे न सके। बाकी सभी शास्त्र आदि हैं भक्तिमार्ग के। ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। नीचे उतरते ही रहते हैं। भक्ति का शो बहुत है। कितना कुम्भ का मेला लगता है। ऐसे कोई भी नहीं कहता कि अभी तुमको पवित्र बनकर नई दुनिया में जाना है। यह कोई भी कह न सके। बाबा ही बताते हैं। अभी संगमयुग है। तुमको पढ़ाई भी वही मिलती है जो कल्प पहले मिली थी मनुष्य से देवता बनने। गायन भी है मानुष से देवता..... जरूर बाप ही बनावेंगे ना। तुम जानते हो हम अपवित्र गृहस्थ धर्म वाले थे। अभी बाबा आकर फिर प्रवृत्ति मार्ग का बनाते हैं। तुम बहुत ऊँच पद पाते हो। ऊँच ते ऊँच बाप कितना ऊँच बनाते हैं। बाप की है श्रीमत। अर्थात् श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ मत। हम श्रेष्ठ यह बनते हैं। श्रीमत के अर्थ का सन्यासियों को पता नहीं है। एक शिवबाबा ही श्रेष्ठ बनाने वाला है। इसलिए उनका ही श्री श्री का टाइटल है; परन्तु वह फिर अपन को श्री2 कह देते हैं। माला फेरी जाती है। माला है 108 की। उन्होंने 16108 की बनाई है। उनमें भी आठ तो आते ही हैं। चार जोड़ी और एक बाप। आठ रत्न और नव हूँ मैं। उनको नवरत्न कहते हैं। इन्हों को ऐसा रत्न बनाने वाला बाप ही है बीच में। तुम बाप द्वारा कितने पारस बुद्धि बनते हो। रंगून में एक तालाब है कहते हैं इनमें स्नान करने से परियाँ बन जाती हैं। वास्तव में है यह ज्ञान स्नान। जिससे तुम देवता बन जाते हो। बाकी वह तो सभी हैं भक्तिमार्ग की बातें। बाप समझाते हैं यह तो हो भी नहीं सकता। पानी में स्नान करने से परी बन जाये। यह सभी है भक्तिमार्ग। क्या2 बातें बना दी हैं। कैलाश पर्वत पर अमरनाथ ने पार्वती को अमरकथा सुनाई। फिर यह हुआ अमरपुरी चले गये। क्या2 लिख दिया है। कुछ भी समझते नहीं। अभी तुम समझते हो हमारा ही यादगार दिलवाला, गुरुशिखर है। बाप बहुत ऊँच रहते हैं ना। तुम जानते हो बाप और हम आत्माएँ कहाँ निवास करते हैं। वह है मूलवतन। सूक्ष्मवतन तो सिर्फ सा0 मात्र है। वह कोई दुनिया नहीं है। सूक्ष्मवतन के लिए ऐसे नहीं कहेंगे कि वर्ल्ड हिस्ट्री रिपीट। न मूलवतन के लिए कहेंगे। वर्ल्ड तो एक ही है ना। और कुछ है नहीं। इस वर्ल्ड की हिस्ट्री रिपीट कहा जाता है। मनुष्य कहते हैं विश्व में शान्ति हो। यह जानते नहीं कि आत्मा का स्वधर्म ही शान्त है। बाकी जंगल में थोड़े ही शान्ति मिल सकती है। तुम बच्चों को सुख–शान्ति सभी कुछ मिल जाती है। पहले शान्तिधाम में जाकर फिर सुखधाम में आवेंगे। कई कहेंगे हम ज्ञान नहीं लेवें। पिछाड़ी में आवेंगे तो बाकी इतना समय मुक्ति में रहेंगे। यह तो अच्छा है। बहुत समय मुक्ति में रहेंगे। यहाँ करके एक/दो जन्म पद पावेंगे। वह क्या हुआ। जैसे मच्छर निकलते और यह मरे। रात को कितने ढेर मच्छर निकलते, उड़ते हैं फिर सुबह को देखो तो खत्म हुए पड़े हैं। ऐसा जन्म तो जनावर, पक्षियों आदि का भी होता है। मनुष्य का भी ऐसा जन्म हो तो फर्क ही क्या रहा। मनुष्य का ऐसा तो न होना चाहिए ना। देवता बन न सके। एक जन्म में यहाँ क्या सुख रखा है। थोड़ी बड़ाई होगा। बस। जैसे मच्छड़। एक जन्म लेना। वह तो कोई काम का न रहा। जैसे कि पार्ट ही नहीं। तुम्हारा पार्ट तो बहुत ऊँच ते ऊँच है। तुम्हारे जितना सुख और कोई देख न सके। इसलिए पुरुषार्थ करना चाहिए। करते भी रहते हैं। कल्प पहले भी तुमने पुरुषार्थ किया था। अपने पुरुषार्थ अनुसार प्रारब्ध पाई थी। पुरुषार्थ बिगर तो प्रारब्ध पा न सके। पुरुषार्थ जरूर करना है। बाप कहते हैं यह भी ड्रामा बना हुआ है। तुम्हारा भी पुरुषार्थ होता है ड्रामा के प्लैनअनुसार। इससे यह नहीं समझना है ड्रामा अनुसार आपे ही पुरुषार्थ चल पड़ेगा। ऐसे तो चल न सके। तुमको पुरुषार्थ जरूर करना पड़े। पुरुषार्थ बिगर थोड़े ही कुछ होता है। खाँसी आपे ही कैसे उतरेगी। दवाई, गोली आदि लेने का पुरुषार्थ करना पड़े ना। कोई2 ऐसे भी ड्रामा पर बैठ जाते हैं। जो ड्रामा में होगा। ऐसे उल्टा ज्ञान बुद्धि में नहीं बिठाना है। यह भी माया विघ्न डालती है। बच्चे पढ़ाई को ही छोड़ देते हैं। इसको ही कहा जाता है माया से हार। लड़ाई ना।

लड़ाई है ना। वह भी जबरदस्त है; इसलिए गाया जाता है गज को ग्राह ने खाया। समुद्र के अन्दर भी बहुत बड़े–2 जीव होते हैं। इतने बड़े हैं जो स्टीमर खड़ा हो जाता है। बहुत ताकत वाले होते हैं। सतयुग में तो यह स्टीमर आदि होते ही नहीं। दरकार ही नहीं। विमान होंगे वह भी सुख के लिए। दुःख की कोई बात होती ही नहीं। फुल प्रूफ होते हैं। इस समय साइंस का भी कितना ज़ोर है। 100 वर्ष कितने बिजली आदि की उन्नति हुई है। तो मीठे–2 बच्चों को बाप समझाते हैं। यह ड्रामा है। एक सेकण्ड न मिले दूसरे से। सेकण्ड पास हुआ। मिनट पास हुआ, घंटा पास हुआ ऐसे होते–2 5000 वर्ष हो गये। 5000 वर्ष में कितने मास, कितने घंटे, कितने मिनट कितने सेकण्ड होंगे। हिसाब निकाल सकते हैं। कोई होशियार बच्चा हो तो झट हिसाब निकाल सकते हैं। 5000 वर्ष की बात है। हिसाब निकालने में थोड़ा माथा मारना पड़ेगा। इतना ही टाइम याद की यात्रा में रहो तो कितने पाप कट जायें; हर्जा थोड़े ही है। हिसाब निकालने में बहुत–2 करके एक घंटा लगेगा। तुमको अभी अपने 84 जन्मों की स्मृति आई है; इसलिए बाप कहते हैं 84 का चक्र बुद्धि में फिराते रहना है। अभी यह है अन्तिम जन्म। फिर पहले नम्बर में जाना है। नई दुनिया सिवाय तुम्हारे और कोई जा नहीं सकते; क्योंकि पतित आत्माएं हैं। सतयुग में होते हैं पावन आत्माएं; इसलिए वहां पतित–पावन को बुलाने की दरकार ही नहीं। यहां पुकारते हैं हे पतित–पावन; क्योंकि सभी पतित हैं ना। सभी हैं भक्त। राम एक ही है। वह है सभी का ब्राइड्सब्रुम। तुम सभी हो भक्ति के सागर। वह है ज्ञान का सागर। भक्ति के सागर सभी दुःखी हैं। ज्ञान सागर से सदैव सुख ही मिलता है। झाड़ में भी क्लीयर दिखाया हुआ है। निवृत्ति मार्ग वाले आते ही हैं बाद में। सन्यासियों में भी कोई भ्रष्ट होकर गृहस्थी में आ जाते हैं। गृहस्थियों से फिर सन्यास में चले जाते हैं। ऐसे भी होता है। अभी तुम जानते हो सभी आत्माएं अपने–2 धर्म में अपने सेक्शम में जाकर बैठेंगी। सारा ड्रामा का, मूलवतन का भी राज़ बता दिया है। मनुष्य सृष्टि को वैराइटी धर्मों का झाड़ भी कहा जाता है; इसलिए विराट रूप भी बनाया जाता है। यह बड़ी समझ की बात है। पढ़ाई है। बाप कहते हैं गृहस्थ व्यवहार में रहते उस आमदनी का भी उपाय करना है। धंधा आदि करना है। नहीं तो घर कैसे सम्भालेंगे। वह करते हुये बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो पाप कट जावेंगे। बाबा ऐसे नहीं कहते हैं कि छोड़ो। इसने कोई भी छुड़ाया नहीं। यह ड्रामा की भावी बनी हुई थी। बाबा ने तो एक को भी नहीं कहा कि छोड़ो। कितने बांधेली भी थी। कोई के माँ–बाप ज्ञान में होते हैं तो बच्चे को भी ले आते हैं। लेने वाले कैसे भी करके चले आते थे। उनको कहते हैं हम तुमको अपने पंचायत से निकाल देंगे। कहते थे अभी निकाल दो। हम अपने ईश्वरीय पंचायत में जावेंगे। और ही अच्छा है। तो यह सभी ड्रामा में पार्ट था। कंसपुरी को छोड़ चले गये। जहां बहुत ही आराम से जाकर रहे। समझते यह तो सफेद पोशधारी खुदा प्रस्त है पवित्र और खुदाप्रस्त। सिर्फ एक बाप को याद करने वाले। कितना आराम से रहे पड़े थे। तुम्हारी सम्भाल करने वाला बाप था। निडर रहते थे । डर की कोई बात ही नहीं। इसको कहा जाता है भट्ठी। फिर कोई फर्स्ट क्ला निकले। कोई कच्चा कोई कैसे। रुपये भी कोई सच्चे कोई झूठे निकलते हैं ना। ठपा तो सभी पर लग जाता है। सब एक जैसा ठका नहीं करते हैं। तुम बच्चों पर भी शिवबाबा का ठपा तो लगता है। पूरा ठपा उनपर लगता है जो विजय माला के दाना बनते हैं। बाप तुम बच्चों को मुक्तिधाम ले जाते हैं। कोई योगबल से हिसाब चुक्तू कर जाते हैं, कोई सज़ा खाकर जाते हैं। हिसाब–किताब तो सभी चुक्तू होना है ना। फिर पद भी ऐसा मिलता है; इसलिए बाबा कहते हैं खूब पुरुषार्थ करो। माया को सभी को नाक से पकड़ लेती है। विधवा होंगी तो भी क्रिमनल आई हो जावेंगी। जैसे विधवा बन जाती है। बाप कहते हैं वैश्यालय रूपी आंखों को शिववालय रूपी आंख बनाओं। जैसे इन ल0ना0 के हैं। इनकी कब क्रिमनल आई हो न सके। रावण राज्य में आंखें बड़ा धोखा देती हैं। फिर बहुत मेहनत करनी पड़ती है। अच्छा बच्चों को याद प्यार गुडमॉर्निंग। नमस्ते।